

रविवार विशेषांक

सभी पाठकों को सादर नमस्कार!

प्रिय पाठकों, आज के रविवार विशेष में पूर्वोत्तर भारत की यात्रा को जारी रखते हुए आइये जानें कुछ और पर्यटन स्थलों के बारे में।

उत्तर पूर्वी भारत हमेशा से ही सैलानियों व पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। क्योंकि पर्यटन के क्षेत्र में यह काफी उन्नत माना जाता है। केन्द्र सरकार पूर्वोत्तर के राज्यों में पर्यटन को और बढ़ावा देने की तैयारी कर रहा है। सरकार ने यहां पर ‘स्वदेश दर्शन’ और ‘प्रशाद’ (तीर्थ यात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक, विरासत संवर्धन अभियान पर राष्ट्रीय मिशन) जैसी योजनाएं शुरू कर रखी हैं। अब पर्यटकों को यहां पर पहुंचाने के लिए हवाई, रेलवे और सड़क कनेक्टिविटी भी बेहतर की भी योजना बनाई जा रही है। इसके लिए हाल ही में गुवाहाटी में दो दिवसीय 13 - 14 सितंबर 2021 को कॉन्फ्लेव का आयोजन किया गया, जिसमें केन्द्रीय पर्यटन, संस्कृति और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री जी. किशन रेड्डी, असम के मुख्यमंत्री समेत पहली बार पूर्वोत्तर के सभी राज्यों के पर्यटन और संस्कृति मंत्री समेत केन्द्र और राज्य के तमाम अधिकारियों ने एक साथ भाग लिया।



पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित इस कॉन्फ्लेव के पहले दिन पूर्वोत्तर में पर्यटन बुनियादी ढांचे को बेहतर करने, विकास को बढ़ावा देने और स्किल डेवलपमेंट के लिए प्रोजेक्ट की जानकारी दी गई। पर्यटन के विकास के लिए स्थानीय कला और संस्कृति को बढ़ावा देने पर संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रजेंटेशन भी दिया गया। पर्यटन मंत्रालय ने स्वदेश दर्शन योजना के तहत पूर्वोत्तर क्षेत्र में 1300 करोड़ रुपये से अधिक की 16 परियोजनाओं जैसे पूर्वोत्तर, विरासत, इको सर्किट, आध्यात्मिक, आदिवासी आदि को मंजूरी दी है। पूर्वोत्तर में इस योजना के तहत 193.61 करोड़ रुपये की कुल 06 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है।

वहीं, दूसरे दिन यानी 14 सितंबर को तकनीकी सत्र में स्वदेश दर्शन और प्रशाद योजनाओं के तहत स्वीकृत विभिन्न परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई। केन्द्रीय पर्यटन राज्य मंत्री अजय भट्ट ने कहा कि स्वदेश दर्शन से पूर्वोत्तर में पर्यटन को बढ़ाने के लिए और योजनाएं बनाई जाएंगी, उन्होंने कहा कि पर्यटन पूर्वोत्तर के राज्यों के लिए गेम चेंजर साबित हो सकता है। इसके लिए केन्द्र सरकार लगातार प्रयास कर रहा है। उन्होंने सलाह दी कि पूर्वोत्तर के राज्यों और संबंधित एजेंसियों को टॉस्क फोर्स बनाना चाहिए, जिससे आपस में समन्वय स्थापित कर विकास का काम लगातार होता रहे। वहीं, पर्यटन सचिव अरविंद सिंह ने कहा उत्तर पूर्व के राज्यों में पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे यहां पर स्थानीय पर्यटकों के अलावा पूरे देश से पर्यटक पहुंचें।





तो चलिये शुरू करते हैं और आपको ले चलते हैं असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और मिजोरम की यात्रा पर.....

असम



असम की राजधानी गुवाहाटी को उत्तर पूर्व की सात बहनों के प्रवेश द्वार जाना जाता है। यह राज्य अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। खूबसूरत परिदृश्य, वन्यजीव अभ्यारण्य, ब्रह्मपुत्र और संस्कृति की सुंदर सुंदरता को देखते हुए, यह विभिन्न संस्कृतियों और जातियों से संबंधित लोगों का घर है। असम की भूमि विभिन्न शिल्पों का भी घर है। असम कई संस्कृतियों का भी घर है यहां कई त्यौहार एवं उत्सव मनाए जाते हैं जिनमें भोगली या माघ-भोगली (जनवरी), रोंगोली या बोहाग बिहू (अप्रैल), कोंगली या काती-बिहू (मई), वैशागु (मध्य अप्रैल में बोडो कछारी लोगों द्वारा) और अली-अई -लिगांग (मिशिंग जनजाति का पर्व) मनाया जाता है। बिहू का त्यौहार असम में तीन बार विभिन्न तरह से मनाया जाता है। जिसमें शामिल होकर आप यहां की संस्कृति से भी जुड़ सकते हैं।

प्राकृतिक सौंदर्य से मानव निर्मित आकर्षण तक, भारत के इस हिस्से में आनंद लेने और अनुभव करने के लिए बहुत कुछ है। असम की अपनी यात्रा पर असम के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में जंगल का आप पता लगा सकते हैं जहां आप लुप्तप्राय एक-सींग वाले गैंडों को देख सकते हैं जो केवल इसी अभ्यारण्य में पाए जाते हैं। इसके साथ ही माजुली- दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप असम में एक चिड़ियाघर का स्वर्ग है। असम के कुछ सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में कामाख्या मंदिर, ब्रह्मपुत्र नदी कूज, गुवाहाटी प्लेनेटरीयम, गिब्वन वन्यजीव अभ्यारण्य, नवग्रह मंदिर, दीफू हैं जो असम की यात्रा में देखने वाले प्रमुख स्थल है। यदि आप असम जाएं तो इन जगहों की यात्रा करना ना भूलें।

अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश उत्तर पूर्वी भारत का एक और आकर्षक गंतव्य है। अरुणाचल प्रदेश भूटान और चीन के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमाओं को साझा करता है। यह विवादित मैकमोहन लाइन के करीब है।



अरुणाचल प्रदेश को 'राइजिंग सन की भूमि' भी कहा जाता है क्योंकि यहां सबसे पहले सूर्य का उदय होता है। आप यहां से सूर्य की अनुपम छटा को देख सकते हैं। यह छोटा राज्य बौद्ध मठों की बड़ी संख्या का घर है जिसमें तवांग मठ, बोम्मिला मठ, एनी गोम्पा मठ शामिल हैं। अरुणाचल प्रदेश साहसिक-पैक यात्रा के लिए भी सही है क्योंकि यहां आप राफ्टिंग, एनलिंग और ट्रेकिंग के लिए कई जगहें पा सकते हैं। जहां आप कई साहसिक गतिविधियों को कर रोमांचित हो सकते हैं।

अरुणाचल प्रदेश पर्यावरण पर्यटन के लिए भी जाना जाता है और यात्रियों को अनदेखा पहाड़ों और घाटियों में चलने की सुविधा प्रदान करता है। नामदाफा राष्ट्रीय उद्यान, नूरांग फॉल्स, मौलिंग राष्ट्रीय उद्यान अरुणाचल प्रदेश के कुछ अन्य प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से कुछ हैं। अरुणाचल प्रदेश में कई त्यौहार भी मनाए जाते हैं। जिनमें सियांग नदी उत्सव, न्योकुम (न्यिशी जनजाति द्वारा मनाया जाने वाला पर्व), लोसर उत्सव (नववर्ष के स्वागत हेतु), ड्री उत्सव, बोरी बूट (फसल की सफल पैदावार हेतु), लोकू (शीत ऋतु की विदाई हेतु), संकेन (लोहित जिले की खाम्प्टी जनजाति द्वारा मनाया जाने वाला पर्व), पांगसाउ, संगीत का जिरो उत्सव, सोलुंग (कृषि उत्सव) इत्यादि शामिल है जिनका आप आनंद ले सकते हैं।

आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि कृपया अपने अमूल्य समय में से कुछ समय निकालकर "दैनिक पर्यटन समाचार" की प्रथम वर्षगांठ विशेषांक (बुधवार 29 सितम्बर 2021) के लिए अपने लेख / विचार अपने छायाचित्र के साथ हमें इस ईमेल पर भेज सकते हैं - social@iittm.ac.in



मणिपुर



लोकतक झील और केबुल लैमजाओ नेशनल पार्क के लिए प्रसिद्ध, जो दुनिया का एकमात्र फ्लोटिंग राष्ट्रीय उद्यान है, वह मणिपुर में ही स्थित है। मणिपुर अपनी जादुई सुंदरता और विविधीकरण विविधता के लिए प्रसिद्ध है। सुरम्य परिदृश्य से विदेशी वन्यजीवन, फ्लोटिंग द्वीपों तक, मणिपुर के पास सब कुछ है। मणिपुर कभी भी अपनी सुंदरता और शांति में किसी को भी भटकने नहीं देता जो भी यहां आता है वो इसकी सुंदरता में मंत्रमुग्ध हो जाता है। मणिपुर को 'स्विट्ज़रलैंड ऑफ इंडिया' के रूप में भी जाना जाता है, जो सभी राज्यों के दौरे के पर्यटकों की कल्पना को पकड़ने के लिए काफी है। स्विट्ज़रलैंड की ही भांति यहां भी सुंदरता की कमी नहीं है। यह राज्य वनस्पतियों और जीवों में समृद्ध है। यहां लुप्तप्राय मणिपुरी सांगई हिरण का घर है।

लोकतक झील, केबुल लैमजाओ नेशनल पार्क, सडु चिरु झरना, आरकेसीएस आर्ट गैलरी और संग्रहालय, थलॉन गुफा, निलाई चाय एस्टेट, मटाई गार्डन, खांगखुई गुफा, राज्य के कुछ प्रमुख आकर्षक स्थल हैं। इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता का एकदम सही मिश्रण, मणिपुर हर भाव में समृद्ध है, चाहे वह प्रकृति की सुंदरता या भूमि की संस्कृति में हो। मणिपुर में कई धार्मिक और सांस्कृतिक स्थल भी हैं जिनमें गोविन्दजी मंदिरमणिपुर र सेन्दरा द्वीप खाम्बा(भगवन शिव का अवतार), थोइवी (पार्वती का अवतार) द्वारा भव्य वस्त्रों में विभिन्न मुद्राओं में नृत्य करना, रासलीला, पुंग चोलोम या करताल चोलोम इत्यादि प्रमुख हैं। आप यहां आए तो इन जगहों पर अवश्य जाएं।

मिजोरम

मिजोरम सबसे अच्छे पूर्वोत्तर स्थलों में से एक है जो आगंतुकों को जबरदस्त प्राकृतिक सुंदरता और सुंदर परिदृश्य प्रदान करता है। इस राज्य का नाम "मिजो" से मिलता है, जो देशी निवासियों के द्वारा दिया गया नाम है। मिजो पहाड़ों, घाटियों को कहते हैं। इनके सुंदर संयोजन के साथ प्रचुर मात्रा में यहां उपलब्ध है। यह जगह छुट्टियों की यात्रा को फिर से जीवंत



मुद्रा अद्यतन (##)

मुद्रा	मूल्य ₹
1 USD (US\$)	73.83
1 EURO (€)	86.53
1 GBP (£)	101.01
1 JPY (¥)	0.667
1 AUD (A\$)	53.62

(##) सभी आंकड़े लाइव मिड-मार्केट रेट हैं, जो उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध नहीं हैं और केवल सूचना के उद्देश्य से हैं।

करने के लिए एकदम सही है। मिजोरम की खासियत है कि यह पूरे साल पर्यटकों का स्वागत करती है।

यहां फेंगपुई हिल्स के शानदार हरे पहाड़ियों या कैस्केडिंग वांटावांग झरने के मनोरम दृश्य भारत के अन्य राज्यों से इसे खास बनाते हैं। फॉन्गपुई, लेंगटेन्ग या मावरॉंग के लिए ट्रेकिंग टूर यात्रियों के लिए एक और खुशी का अवसर है। पलक झील, तंजोल, चिंगपुई का स्मारक मुरलेन राष्ट्रीय पार्क, तमदिल झील, रिहदिल झील, लेंगतेंग पहाड़ी मिजोरम में अन्य प्रसिद्ध पर्यटक स्थल हैं। यहां के प्रमुख त्यहारों में चपचारकूट उत्सव (बसंत उत्सव), मिमकुट, पॉलकुट, एंथुरियम, क्रिसमस इत्यादि हैं जिनमें शामिल होकर आप मिजोरम की संस्कृति से और भली भांति परिचित हो सकते हैं।

आप 'दैनिक पर्यटन समाचार' में पर्यटन विषय पर अपने लेख/विचार एवं अपने बहुमूल्य सुझाव देने के लिये हमें संपर्क कर सकते हैं।
 ईमेल द्वारा: social@iittm.ac.in व्हाट्सएप द्वारा: +91 70427 30070

#आज़ादीकाअमृतमहोत्सव #जयहिंद **आपका दिन शुभ हो...!**

f @IITMOFFICIAL i @iittmofficial y @IITMOFFICIAL

अस्वीकरण: भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान, ग्वालियर मुख्यालय द्वारा प्रस्तुत 'दैनिक पर्यटन समाचार' का मूल उद्देश्य पर्यटन अकादमिक जगत को दैनिक आधार पर हो रही घटनाओं व गतिविधियों से रूबरू कराना है, चूंकि पर्यटन जगत बहुत 'गतिक' (डायनेमिक) है। इस समाचार पत्र का स्रोत आधार विभिन्न सूचना माध्यमों से प्राप्त सम्प्रेषण है। अतः इनकी पुष्टि, संस्थान व संपादन मंडल नहीं करता है। हालांकि अकादमिक हित में इसकी प्रस्तुति केवल ज्ञान उन्नयन हेतु की जाती है।

“दैनिक पर्यटन समाचार” को ऑनलाइन पढ़ने के लिए देखें हमारा फेसबुक पेज <https://www.facebook.com/DPSbyIITTM>